

अनुसृजन में लोप और संयोजन: 'दु वधा' के साहित्यिक और सनेमाई रूपान्तरण के संदर्भ में
**[Omission and Commission in Transcreation : With reference to Literary and
Cinematic Transformation of 'DUVIDHA']**

Dr Suraj Kumar

Assistant Professor, Central University of Karnataka

surajkumar@cuk.ac.in

Abstract

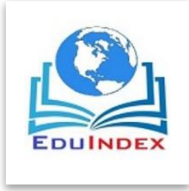
Creative use of Source language text, in place of faithfulness to that text makes the translation into transcreation. Vijaydan Detha uses this skill to retell oral folktale. He has started collecting Rajasthani folktales and started documenting it in written words and thus-'Batan ri Phulvadi' came into being. In beginning, he was merely doing a transcription of words but later he shifted to transcreate with contemporary motifs. Duvidha story is compiled in 'Baatan Ri Phulvaari-Part 10'. Later Kailash Kabir has translated Duvidha into Hindi. This translation has three versions and is different in language and content also. There is clearly lots of omission and commission of words and events. Based on this story there are two films in Hindi-one is Duvidha (Mani kaul, 1973) and second is Paheli (Amol Palekar, 2005). Mani tries not to deviate from the story and within that framework, he has applied his cinematic genius. On other hands Amol Palekar was more inclined towards making it entertaining and did omission and commission also in the plot to attract the audience.

There is striking the similarity between Duvidha and Nagmandala (a Kannada play by Girish Karnaad); except there is a ghost as a protagonist in Duvidha and a Cobra in Nadmadala. Nagmandala is based on a folktale collected by AK Ramanujan, which is believed to tell in North Kannada in Karnataka. Based of this folktale there are two more plays in Kannada similar to nagmandala. Sudhir Kakar in his book also has indicated that there is one more similar folktale in Tamil. there are the possibility of having more folktale similar to this in other parts of India too.

This paper is an attempt to compare all three Hindi Translation of Duvidha –at language and content level. again it tries to look at the transformation of text from literature/folktale to the cinema and thirdly at the level of intertextuality among folktale, cinema and literary form.

Keywords: Transcreation, ommission, commission, folktale, Hindi

अनुसृजन में लोप और संयोजन: 'दु वधा' के साहित्यिक और सनेमाई रूपान्तरण के संदर्भ में



1. प्रस्तावना

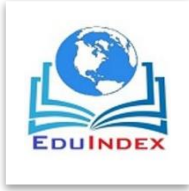
कहानी एक होती है उसके कहने के कई रूप हो सकते हैं। बीज और बरगद की द्वैधता रचनाशीलता में निहित प्रेरणा और सृजनात्मक अनुसृजन को एक व शष्ट रूप देता है। इकांतरे के बुखार को उतारने वाली पूर्वी राजस्थान की मौखिक कथा को बिज्जी अपनी शैली में राजस्थानी में अनुसृजित करते हैं। बाद में हिन्दी में इसी कथा(दुवधा) के तीन रूप(अनुवाद के) अलग-अलग जगह से प्रकाशित मलते हैं। यही नहीं, इससे मलती-जुलती अन्य कथाएँ भी फुलवाड़ी के दसवें भाग में मलती हैं। दुवधा कहानी पर दो फिल्में बनती हैं-सीदोनों सनेमा माध्यम के लिए निर्देशक की अपनी पाठकीय व्याख्या है। दुवधा कहानी से मलती जुलती एक अन्य कहानी ए के रामानुजन के लोककथा संग्रह में प्रकाशित होती है और उसपर आधारित तीन कन्नड़ नाटकों का सृजन होता है-नागमंडल(गरीश कारनाड), सरी संपगे(चन्द्रशेखर कंबार), हाऊं होक्क मनेगळु(हली शेखर)। नागमंडल पर इसी नाम से फिल्म का निर्माण(टी एस नागभरण) भी होता है। इतना ही नहीं नागमंडल से मलती-जुलती लोक कथा के प्रमाण तमल लोककथाओं में भी देखने को मलता है। राजस्थानी लोककथा से हिन्दी में एकाधिक अनुसृजन, फर उसका दुहरा सनेमाई पाठ; कन्नड़ और तमल लोककथाओं में मलती-जुलती लोककथाओं का पाया जाना और उसके भी पुनः साहित्यिक और सनेमाई पाठ - कुल मलकर **intertextuality**(अंतरपाठ) की तरफ इशारा करता है और यह भी बताता है क अनुसृजन में संयोजन और लोप एक स्वाभाविक प्रक्रिया है।

2. बीज और बरगद

वजयदान देथा ने राजस्थानी लोककथाओं को लखत रूप में राजस्थानी भाषा में संकलित करने का कार्य 'बाताँरी फुलवारी'(1-14भागमें) किया है। (यह कार्य उन्होंने उस क्षेत्र में सुनाई जाने वाली लोककथाओं को लपबद्ध करके किया। दुवधा के बारे में अपने एक साक्षात्कार में बताते हैं की जब लोककथा सुनाने वाली स्त्री ने बिज्जी द्वारा रचित कथा(दुवधा) पढ़ी तो चकित रह गयी। क्योंकि जो उसने सुनाया था यह उससे बहुत बड़ा और अलग था। बिज्जी की इस कहानी के तीन हिन्दी रूप मलते हैं, सभी कैलाश कबीर द्वारा अनूदित। इन तीनों अनुवाद में या कहें अनुसृजन में भाषक और कथा के स्तर पर अनेक लोप और संयोजन के उदाहरण मलते हैं। दुवधा कहानी मूल लोककथा में एक ऐसे भूत की कथा है जो धोखे से पति की अनुपस्थिति में स्त्री के साथ रहता है, बाद में असली पति के लौटने पर गुरे डया उसे छागल में बंद कर देता है। बिज्जी इस कथा को ज्यादा संश्लिष्ट और सांकेतिक बनाने का काम करते हैं। कैलाश कबीर भूमिका में लखते हैं : मूल लोककथा का मैसेज है... अंत बुरे का बुरा। वह परंपरागत मर्यादाओं को पृष्ट करती है। 'दुवधा' में स्त्री-पुरुष सम्बन्धों और वैवाहिक संस्था के औचित्य को बेहद बारीकी और कलात्मक तरीके से छानबीन की गयी है। इसमें पुरुष सत्तात्मक परिवार में बेबस स्त्री का चित्र बहुत ही मार्मिकता से उभरकर आता है। बिज्जी के दुवधा के तीन हिन्दी रूप में अंतर का कारण स्पष्टता तो जात नहीं लेकन अनुमान है क पाठकों को ध्यान रखते हुए भाषाई प्रकृति को सरलतर किया गया होगा- कुछ नमूने

पहला पाठ: एक मायापति सेठ था। उसके इकलौते बेटे की *बरातधूमधाम* से ब्याह करके वापस *आ रही थी। जरा सुस्ताने के लिए बरात एक ठौर रुकी।* घरे-घुमेर खेजड़ी की घनी छाया। *सामने हब्बाहोल ठाँटें मारता तालाबा* काच सा निर्मल पानी। (फुलवाड़ी: भाग 10, साहित्य अकादमी प्रकाशन)

दूसरा पाठ: एक मायापति सेठ था। उसके इकलौते बेटे की *बारातठाट-बाट* से ब्याह करके वापस *लौट रही थी। रास्ते में वश्राम करने रुकी।* गहर-घुमेर खेजड़ी की घनी छाया। *सामने*



छिलाछिल हिलोरें भरता हुआ सरोवर । निर्मल जल। (वजयदान देथा रचना संचयन , साहित्य अकादमी प्रकाशन)

तीसरा पाठ: एक धनी सेठ था । उसके इकलौते बेटे की बरात धूमधाम से *शेडी* करके वापस *लौटते हुए जंगल में वश्राम करने रुकी* । घनी खेजड़ी की ठंडी छाया। *सामने हिलोरे मारता तालाबों कमल के फूलों से आच्छादित निर्मल पानी*। (लाजवन्ती, बिज्जी की प्रेमकथाएँ, वाग्देवी प्रकाशन)

उपरोक्त नमनों से यह स्पष्ट है क भाषा को न केवल सरल किया जा रहा है बल्कि भौगोलिक परिवेश को भी सामान्यीकृत किया गया है। वरना राजस्थान के रेगस्तानी परिवेश में जंगल और कमल के फूल से आच्छादित पानी का मलना थोड़ा कठिन ही है।

कहानी के स्तर पर भी तीनों पाठ में कुछ भेद दिखाई देते हैं। कुछ उदाहरण निम्न हैं:

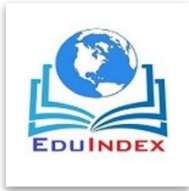
I पहला पाठ	II दूसरा पाठ	III तीसरा पाठ
दूल्हन बारातियों की ओर पीठ करके घूँघट उठाकर बैठ गयी	दूल्हन बारातियों की तरफ पीठ करके बैठी और घूँघट उठा लिया.	दूल्हन मूंह फराये, घूँघट हटा कर बैठ गयी
दिसावर का नाममात्र का उल्लेख	दिसावर में सेठ के बेटे और भील-भीलनी की समानांतर कथा	दिसावर का नाममात्र का उल्लेख
न्याय के समय भूत से गर ड़या डरता नहीं है	तीसरी शर्त से पहले सभी डर जाते हैं	न्याय के समय भूत से गर ड़या डरता नहीं है

उपरोक्त उदाहरण कथा को पाठकानुकूल बनाने की प्रक्रिया का परिणाम हो सकता है वहीं दिसावर में सेठ के बेटे की कथा को संयोजित करने के पीछे उसके चारित्रिक गहराई की सृष्टि का उद्देश्य रहा हो।

बाताँरी फुलवाड़ी के दसवें भाग में ही 'रस-कस दिया जले' और 'बेटा कसका?' कहानी काफी हद तक दुवधा कहानी का ही वस्तु प्रतीत होता है।

2. साहित्य: पन्ने से पर्दे तक

साहित्य का माध्यम शब्द है और सनेमा का प्रकृतया चाक्षुष। बारात, सरोवर, भूत और दिसावर जहां शब्दों में पाठक के मन में साकार होते हैं वहीं सनेमा में इसे भौतिक रूप से पुनर्सृजित करना पड़ता है। आर्थिक और तकनीकी कारण कई बार इसे सी मत कर देता है। साहित्य आधारित सनेमा निर्देशक की अपनी पाठकीय प्रतिक्रिया है। दुवधा कहानी का सनेमाई रूपान्तरण मनी कौल ने अपनी फिल्म 'दुवधा' (1973) और अमोल पालेकर ने 'पहेली' (2005) के माध्यम से किया है। मनी ने अपनी फिल्म में कहानी के परिवेश (milieu) को जीवंत कर दिया है। भौगोलिक परिवेश, परिधान, लोकसंगीत और उपदानों का प्रयोग फिल्म को प्रामाणिक बनाते हैं। फिल्म में संवादों का प्रयोग बहुत कम है। वॉइस ओवर और कैमरे का प्रयोग फिल्म की सांकेतिकता को उभारने के लिए किया गया है।



पूरी फिल्म कहानी के पहले पाठ से कदमताल करते चलती है। फिल्म वहाँ कहानी से संघन हो जाती है जब स्त्री की स्थिति को उसके संवाद की जगह मौन से उकेरा जाता है। फिल्म चल चित्र की जगह एक कैनवास में बदल जाती है। मनी बिज्जी से गहरे रूप से प्रभावित थे। अपने एक पत्र में वे लिखते हैं: कल रात देर तक इस कहानी ने तो सोने ही नहीं दिया। सुलझन का चैन और दोषों की चुभन, दोनों बराबर जाग्रत थीं। ...चाहता हूँ 'नागण थारों बंस बधै' और 'आसमान-जोगी' पर फिल्म में ही बनाऊँ कभी। "मनी साहित्य आधारित सनेमा में मूल से हटते नहीं थे। उनकी कलात्मकता मूल के दायरे में ही अंतर्भूत था। वहीं अर्माँल पालेकर द्वारा निर्देशित 'पहेली' पर व्यावसायिकता का दबाव उसे अधिक 'पोपुलर' तरीके अपनाने पर मजबूत करता है। कथा के साथ कई उपकथाएँ जुड़ जाती हैं जिसकी उपादेयता उसे अधिक मनोरंजक बनाने के लिए है। गाने, नृत्य, हास्य और रोमांच फिल्म के मसाले हैं। अधिक बजट भव्य प्रभाव तो पैदा करता है लेकिन जो प्रभाव दुवधा का गुड़ बांटने वाला दृश्य कर गया है वह यहाँ नहीं है। वहीं कहानी का अंत भी सुखद होता है जो कहानी की मूल भावना के बिल्कुल वपरीत है। मजेदार बात यह कि इस फिल्म के ऊपर कन्नड के एक फिल्म की कहानी को चुराने का आरोप लगता है। और वो फिल्म थी-नागमंडल।

3. अंतर्पाठयिता: लोककथा-साहित्य-सनेमा-नाटक-लोककथा

नागमंडल(1997) फिल्म का निर्माण(टी एस नागभरण) ने गरीश कारनाड के नाटक नागमंडल(1988)पर आधारित थी। इस नाटक की प्रेरणा कार्नाड को ए.के रामानुजन की कहानी से मिली थी। उनके संकलन 'A FLOWRING TREE AND OTHER TALE FROM INDIA' में संकलित कहानी 'The Serpent Lover'ⁱⁱⁱकी कहानी से काफी मिलती जुलती है। ऐसा भी माना जाता है कि उत्तर कन्नड में ऐसी लोककथा प्रचलित है। 'द हिन्दू' समाचारपत्र के एक रिपोर्ट के मुताबिक कन्नड के तीन नाटक-नागमंडल(गरीश कारनाड), सरी संपगे(चन्द्रशेखर कंबार), हाऊँ होक्क मनेगळु(हली शेखर)-ए.के रामानुजन की लोककथा पर ही आधारित है।^{iv} सुधीर कक्कड अपनी पुस्तक 'INDIAN IDENTITY' में कहते हैं कि ए.के रामानुजन द्वारा संकलित लोककथा 'The Serpent Lover' एक तमिल लोककथा के एक हिस्से से काफी कुछ मिलती जुलती है। 'इस तमिल लोककथा (TwoTamilFolkTales)^v' के संकलन में एक लोककथा का बड़ा हिस्साइन लोककथाओं से साम्यता रखता है।

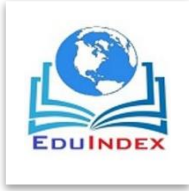
निष्कर्ष:

उपरोक्त विश्लेषणके अंतर्गत -एक पाठ के बहुरूप, एक माध्यम से दूसरे माध्यम में उसके अंतरण, इस प्रक्रिया में उसके संयोजन और उसके लोप के व भन्न रूपों पर विचार किया गया है। उक्त तीन बिन्दुओं पर अलग से कार्य करने की आवश्यकता है। प्रस्तुत पत्र इस विषय की संभावनाओं को संकेतित भर कर रहा है।

संदर्भ

[1] कबीर, कैलाश सं, वजयदान देथा रचना संचयन, साहित्य अकादमी प्रकाशन, नई दिल्ली (2012)

[2] देथा, वजयदान, फुलवाड़ी: भाग 10, साहित्य अकादमी प्रकाशन, नई दिल्ली (2017)



Think India (Quarterly Journal)

ISSN: 0971-1260 Vol-22, Special Issue-06

International Conference on Indigenous Languages and Translation Studies

held on Saturday, 3rd August 2019

Venue- Seminar Hall, **School of Humanities and Social Sciences**, Jain Deemed-to-be-University, Palace Road, Bengaluru, India



[3]Amanujan,AK,A flowering Tree and other oral tells from India,University of California Press,Berkeley(1997)

[4]<https://www.thehindu.com/features/metroplus/events/Of-snakes-and-women/article11089497.ece>/15.10.2019/11pm(20

[4]Kakar,Sudhir,Indian Identity,Penguin Books,New Delhi(2007)

[5]ZevelebilVKamil,TwoTamilFolktales,Motilal BanarsiDas,Delhi(1987)